卐 श्रीमद्राघवो विजयते 卐

श्रीसीतारामसुप्रभातम्

प्रणेता

कविकुलरत्न जगद्गुरु रामानन्दाचार्य

स्वामी रामभद्राचार्य

'श्रीसीतारामसुप्रभातम्' के प्रणेता

धर्मचक्रवर्ती महामहोपाध्याय, कविकुलरत्न, प्रस्थानत्रयीभाष्यकार, श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामीरामभद्राचार्य जी महाराज का संक्षिप्त परिचय

धर्मचक्रवर्ती श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर पूज्यपाद जगद्गुरु रामानन्दाचार्य **स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज** वर्तमान युग में ज्ञान, भक्ति और वैराग्य की **साक्षात् प्रतिमा** हैं। आपके श्रीमुख से वेद, उपनिषद्, व्याकरण, वेदान्त, पुराण, रामायण, भागवत एवं श्रीतुलसीसाहित्य के गूढ़तमकथाप्रसंग अत्यन्त सरल एवं सरस शैली में स्फुरित होते हैं इसीलिए देश-विदेश के मूर्धन्यमनीषी, भारत के शुभैषी एवं अनेक ख्यातिप्राप्त कथावाचक इनके वैदुष्य और कार्यों से चमत्कृत एवं प्रभावित होते हैं। भगवत्कृपाप्राप्त नवीन भावों से तथा अहर्निश अपनी श्रम संचित शास्त्रीय प्रतिभा से भगवदीय कथाओं को सजाने संवारने में सिद्ध एवं प्रसिद्ध पूज्य आचार्यश्री की दिव्यवाणी भक्तों को भगवान के नाम, रूप, लीला तथा धाम का अद्भुत आनन्द प्राप्त कराने में **पूर्ण समर्थ** है। ध्यातव्य है कि पूज्य जगद्गुरु जी वेदादिधर्मशास्त्रों के **मर्मज्ञ** तथा शब्दशास्त्र के जहाँ **कुशल शिल्पी** हैं वहीं शास्त्रीय व्याख्याओं एवं भारतीय जीवन मूल्यों के अद्भुत **उद्गाता** भी हैं। साथ ही संस्कृत-हिन्दी आदि अनेक भारतीय भाषाओं में सद्यःप्रस्फुटित अपनी रचनाओं के कारण विद्वत्समाज में **अद्वितीय** स्थान रखते हैं। पूज्यपाद गुरुदेव में शास्त्रीयता, प्राचीनता एवं जागरूकता जैसे अनेक **लोकोत्तर गुण** सदैव विराजते हैं। हिन्दुराष्ट्र के विशुद्ध चिन्तन एवं संघटनात्मक परिवर्तन के जहाँ ये प्रबल **पक्षधर** हैं वहीं रामविमुख आधुनिकता और राष्ट्रविरोधी गतिविधियों के **घोर विरोधी** हैं।

पूज्यपाद आचार्यश्री भगवद्भक्ति के साथ-साथ राष्ट्रभक्ति के भी **प्रमुख पुरोधा** हैं। इन्होंने प्रस्थानत्रयी पर **विशिष्टाद्वैतपरक श्रीराघवकृपाभाष्य** लिखा है एवं लगभग **५० मौलिक ग्रन्थों** का प्रणयन किया है। इनके द्वारा भारतीय संस्कृति एवं विकलांग बहिन-भाइयों के उत्थान हेतु किये जा रहे संकल्प एवं प्रकल्प देश-विदेश में प्रसारित हो रहे हैं। २९ जुलाई २००१ को श्रीचित्रकूटधाम में पूज्यपाद जगद्गुरु जी ने तत्कालीन उत्तर प्रदेश सरकार के पूर्ण सहयोग से विकलांगों के सर्वाङ्गीण विकास के लिए सेवा संसार में प्रथम कहे जाने वाले **''जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय''** की स्थापना की है। उल्लेखनीय है कि आपश्री ही इस विश्वविद्यालय के **''जीवनपर्यन्त कुलाधिपति''** पद पर समलंकृत हैं। विगत दिनों पूज्य आचार्यश्री को **राष्ट्रपति पुरस्कार**, **साहित्य अकादमी पुरस्कार**, **वाचस्पति**, **महाकवि**, **कविकुलरत्न** एवं **रामकृष्ण जयदयाल डालमिया श्री वाणी अलंकरण** से भी सम्मानित किया गया है। संक्षेप में कहें तो भावुक भक्तों को भगवद्भक्तिरस द्वारा, धर्माचार्यों को शास्त्रानुमोदित धर्माचरण द्वारा, तलस्पर्शी मनीषियों को काव्यानन्द द्वारा, हिन्दुराष्ट्रभक्तों को राष्ट्ररूप श्रीराम के समर्चन द्वारा एवं विकलाङ्ग जगत को अहर्निश निरपेक्ष सेवा द्वारा आनन्दित करने वाले भगवत्कृपावतार पूज्यपाद आचार्यचरण सभी के लिए **प्रेरणास्रोत** होने से **सतत वन्दनीय** हैं।

श्रीसीतारामसुप्रभातम्

(भावार्थ सहित)

प्रणेता

धर्मचक्रवर्ती, महामहोपाध्याय, कविकुलरत्न वाचस्पति

श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य

स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज

जीवनपर्यन्त कुलाधिपति

जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांगविश्वविद्यालय

चित्रकूट (उ०प्र०)

प्रकाशक

जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय

चित्रकूट (उ०प्र०)

प्राङ्निवेदनीय

सुप्रभातं च ते राम सुप्रभातं जगत्पते।
सुप्रभातं श्रियो भर्तुः सुप्रभातं महीभुजः।।

मेरा प्रत्येक क्षण और मेरे जीवन का प्रत्येक संकल्प परिपूर्णतम परात्पर परब्रह्म परमात्मा श्रीसीताभिराम भगवान् राम श्रीराघवसरकार के ही संकेत से संचालित है- ऐसा मुझे पल-पल अनुभव होता रहता है। यद्यपि 'सुप्रभातम्' की परम्परा गायत्रीदृष्टा महर्षि विश्वामित्र के द्वारा राजर्षिवर्य चक्रवर्ती श्रीदशरथ जी से यज्ञरक्षार्थ माँगकर श्रीलक्ष्मण के सहित अपने साथ ले जाते हुए प्रथम रात्रि में शयन करके उसके बीत जाने पर प्रातःकाल विश्राम की मुद्रा में विराजमान भगवान् श्रीराम को जगाने के क्रम में 'कौसल्या सुप्रजा राम पूर्वा संध्या प्रवर्तते। उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्तव्यं दैवमाह्निकम्' श्लोक गाकर प्रारम्भ की गई। यह श्लोक वाल्मीकीय रामायण में बालकाण्ड के २३वें सर्ग के द्वितीय श्लोक के रूप में महर्षि वाल्मीकि द्वारा विश्वामित्र के मुख से गाया जाता हुआ सुनकर अपनी दिव्य दृष्टि से दर्शन करके लिखा गया। इसके पश्चात् १२वीं शताब्दी के अनन्तर काञ्ची के प्रथम रामानुजाचार्य महन्त प्रतिवादी भयंकर स्वामी अनन्ताचार्य जी के द्वारा २९ श्लोकों में श्री वेंकटेशजी का सुप्रभातम् लिखा गया, जिसे २०वीं शताब्दी के उत्तरार्द्ध में आन्ध्र की प्रसिद्ध गायिका श्रीमती शुभालक्ष्मी द्वारा गाया गया। आज उसी सुप्रभातम् का रिकार्ड प्रायशः सभी धार्मिक मन्दिरों में बजाया जा

रहा है। भगवान् श्रीराम के लिए अद्यावधि कोई विस्तृत सुप्रभातम् उपलब्ध नहीं था। मुझे बहुत उपालम्भ मिलते रहे हैं। संयोग से इसी विगत नवरात्र में ३०-९-२००८ से ८-१०-२००८ तक के प्रवास में जब मैं कथा के क्रम में तिरुपति गया उसी समय भगवान् श्रीनिवास जी की आज्ञा से वहीं पर इस "श्रीसीताराम सुप्रभातम्" की मेरे द्वारा चार वृत्तों में रचना की गई। इसमें एक से आठ तक शार्दूलविक्रीड़ितम् ९ से ३२ तक वसन्ततिलका, ३३ से ३६ तक स्रग्धरा और ३७ से ४० तक मालिनी छन्द प्रस्फुटित हुए। इसकी फलश्रुति वसन्ततिलका में है। इस स्तव में जो भी उपादान आए हैं वे भगवान् श्रीसीताराम जी की प्रेरणा तथा भगवान् श्री श्रीनिवास जी की आज्ञा से ही प्रस्फुटित हुए हैं इसमें मेरा अपना कुछ भी नहीं है। इसे मैंने प्रयास करके अपने ही स्वर में गाकर बैरागी राग में ध्वनिबद्ध किया जो अब श्रीरामभक्तों को सी०डी० कैसेट, वीडियो कैसेट और ऑडियो कैसेट के रूप में उपलब्ध होगा तथा पुस्तकाकार होकर साहित्यिक सम्पत्ति के रूप में भी प्राप्त होगा। मैं सभी सनातनधर्मालम्बी बहिनों भ्राताओं बालकों-बालिकाओं से अनुरोध करता हूँ कि इस श्रीसीताराम सुप्रभातम् को सुनकर गाकर पढ़कर एवं पढ़ाकर अपने प्रत्येक प्रभात को भगवान् श्रीसीताराम की कृपा से 'सुप्रभातम्' बनाएँ।

इत्यनुरुन्धे जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामि रामभद्राचार्यः

卐 श्रीः 卐

।। रां कौं कौसल्यायै नमः ।।

कौसल्या सुप्रजाराम पूर्वा संध्या प्रवर्तते।

उत्तिष्ठ नरशार्दूल कर्त्तव्यं दैवमाह्निकम्।।

सुप्रभातम् की परम्परा के अनुसार सर्वप्रथम कौसल्या जी के षडक्षर मन्त्र से उन्हें प्रणाम करना चाहिए क्योंकि उन्हीं का नाम श्रवण करके भगवान् श्रीराम प्रातः काल में नेत्रोन्मीलन करते हैं-

हे श्रीरामभद्र! आपश्री को प्रकट करके भगवती कौसल्या जी सुप्रजा अर्थात् सुन्दर सन्तानवती हुईं अथवा हे महारानी कौसल्या के सुन्दर पुत्र प्रभु श्रीराम! अब आपश्री का मंगलाशासन करने के लिए प्रातःकाल की सन्ध्या प्रवृत्त हो रही है। हे पुरुषों में व्याघ्रस्वरूप, परम पराक्रमी प्रभु! अब शयन त्यागकर उठ जाइये। अब आपको प्रातःकालीन वैदिक कृत्य करने हैं अर्थात् अब स्नान, सन्ध्या, वेदाध्ययन आदि देवसम्बन्धी कार्य अनुष्ठान करने का समय हो गया है।

(यह श्लोक श्रीमद्वाल्मीकीय रामायण के बालकाण्ड के २३वें सर्ग का दूसरा है इसमें महर्षि विश्वामित्र द्वारा भक्ति और श्रद्धा से

उच्चारण करके प्रभु श्रीराम का सर्वप्रथम सुप्रभातम् स्तवन किया गया, अतएव भगवान् श्रीराम की सुप्रभातम् परम्परा के प्रथम आचार्य विश्वामित्र जी ही हैं।)

अथ श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर कविकुलरत्न जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामि रामभद्राचार्य प्रणीतं 'श्रीसीताराम सुप्रभातम्' प्रारभ्यते-

उत्तिष्ठोत्तिष्ठ भो राम उत्तिष्ठ राघव प्रभो।
उत्तिष्ठ जानकीनाथ सर्वलोकं सुखी कुरु।।

हे प्रभुराम! आप उठिए, उठिए, जग जाइए। हे राघव! आप उठिए, हे जनकनन्दिनी, सीताजी के पति! अब प्रभात हो गया है। आप उठिए और सम्पूर्ण संसार को सुखी कर दीजिए।

अब भक्त कवि द्वारा प्रणीत 'सुप्रभातम्' स्तोत्र प्रारम्भ होता है-

सीताराम जनाभिराम मघवल्लालाममञ्जुप्रभ
श्रीसाकेतपते पतत्त्रिपतिना नानार्चनैरर्चित।
नित्यं लक्ष्मणभव्यभव्यभरत श्रीशत्रुभित्सन्नते
शंभूयात्तवसुप्रभातमनघं शार्दूलविक्रीडितम्।।१।।

भावार्थ- हे श्रीसीताराम जी, हे भक्तों को आनन्द देनेवाले, हे इन्द्र की मणि मरकत के समान नीली मधुर कान्ति वाले, हे साकेताधिपति हे पक्षियों के पति गरुड़ तथा आकाश में उड़ने वालों में श्रेष्ठ श्रीहनुमान द्वारा अनेक पूजा सामग्रियों से सेवित, हे श्रीलक्ष्मण के नित्यसेव्य, हे भावते भरत तथा शत्रुघ्न के श्रेष्ठ प्रणामों के आश्रय प्रभु श्रीराम ! आपका यह निष्पाप सुप्रभात, आपकी व्याघ्र के समान पराक्रमपूर्ण क्रीड़ाओं का सभी श्रीवैष्णव भक्तों को अनुभव कराता हुआ सदैव मंगलमय होता रहे।

नीलांभोजरुचे चलाम्बरशुचे वन्दारुकल्पद्रुम
ध्येयज्ञेयसतां यतीन्द्रयमिनां वात्सल्यवारान्निधे।
शार्ङ्गामोघशिलीमुखे- षुधियुत श्रीजानकीवल्लभ
प्रीत्यैस्तात् तव सुप्रभातमनघं हे रावणारे हरे।।२।।

भावार्थ- हे नीले मेघ के समान कान्ति वाले, पवित्रपीतवस्त्रधारी प्रणतजनों के लिए कल्पवृक्ष, सभी सन्तों परिव्राजकों एवं संयमियों के भी ध्यान और ज्ञान के विषय, वात्सल्य के महासागर, शार्ङ्गधनुष अमोघबाण तथा दो अक्षय तूणीर धारण करने वाले, श्री जानकी जी के प्रेमास्पद प्राणपति, रावण के शत्रु, श्रीहरि, प्रभु श्रीराम! यह निष्पाप सुप्रभात आपकी प्रसन्नता के लिए हो।

मन्दं मन्दमवन्पवन्सुपवनः प्रालेयलेपापह-
न्माद्यन्मालयमालतीपरिमलोनद्यः शिवाः सिन्धवः।
भूम्याम्भोहुतभुक्समीरगगनं कालोदिगात्मामनो
लोका वै ब्रुवते प्रसन्नमनसस्त्वत् सुप्रभातं हरेः।।३।।

भावार्थ- हे श्रीहरि! भवभय के नाशक प्रभु श्रीराम! पसीने की बूंद को नष्ट करने वाला प्रसन्नमलय सुगन्ध एवं मालती लता की सुगन्धि से युक्त धीरे-धीरे चलता हुआ यह प्रभातकालीन पवन, कल्याणकारिणी नदियाँ, समुद्र, पृथ्वी, जल, तेज, वायु, आकाश, काल, दिशा, आत्मा, मन और सम्पूर्ण लोक आपका सुप्रभात गान कर रहे हैं।

वेदाः सुस्मृतयः समे मुनिवराः सप्तर्षिवर्या बुधाः
वाल्मीकि सनकादयः सुयतयः श्रीनारदाद्या मुहुः।
सन्ध्योपासनपुण्यपूतमनसो ज्ञानप्रभाभासुराः
सानन्दं ब्रुवते महीसुरवरास्त्वत्सुप्रभातं प्रभो।।४।।

भावार्थ- हे सर्वसमर्थप्रभुश्रीराम! चारों वेद, सुन्दर अठारह स्मृतियाँ तदनुमोदित अठारह पुराण, सभी मुनिगण, सप्तर्षिगण, सभी देवता, महर्षि वाल्मीकि सनक-सनन्दन-सनातन-सनतकुमार श्रेष्ठ संन्यासीगण नारदादि परमवैष्णवदेवर्षिगण, सन्ध्या वन्दन के पुण्य से पवित्र मन

वाले, ज्ञान की प्रभा से सुशोभित होनेवाले श्रेष्ठ ब्राह्मण आपके सुप्रभात की प्रशंसा कर रहे हैं।

विश्वामित्रमहावलेपजलधिप्रोद्यत्तपो वाडवो
ब्रह्माम्भोरुह रश्मिकेतुरनघो ब्रह्मर्षिवृन्दारकः।
वेधः सूनुररुन्धतीपतिरसौ विज्ञो वसिष्ठो गुरु-
र्ब्रूते राघव सुप्रभातममलं सीतापते तावकम्।।५।।

भावार्थ- हे सीतापते श्रीराघव! विश्वामित्र के महान अहंकार रूप समुद्र के लिए जिनकी तपस्या वाडवानल के समान है, जो ब्राह्मणरूप कमल के लिए सूर्य हैं, जिनको पाप छू तक नहीं गया, जो ब्रह्मर्षियों में देवता के समान सर्वश्रेष्ठ ब्रह्मर्षि हैं ऐसे श्रीब्रह्मा जी के पुत्र अरुन्धती जी के पति सर्वज्ञ गुरुदेव श्रीवसिष्ठ जी आपके निर्मल सुप्रभात की मंगलानुशंसा कर रहे हैं।

विश्वामित्रघटोद्भवादिमुनयो राजर्षयो निर्मलाः
सिद्धाः श्रीकपिलादयः सुतपसो वाताम्बुपर्णाशनाः।
प्रह्लादप्रमुखाश्च सात्वतवरा भक्ताः हनूमन्मुखाः
प्रीता गद्गदया गिराभिदधते त्वत्सुप्रभातं विभो।।६।।

भावार्थ- हे सर्वव्यापक प्रभु श्रीराम, विश्वामित्र अगस्त्य आदि मुनिगण निर्मल राजर्षिगण सुन्दर तपस्याओं से युक्त वायु जल और पत्तों का भोजन करने वाले श्रीकपिल आदि सिद्धगण, प्रह्लाद आदि परमभागवतगण, श्रीहनुमान आदि आपश्री के अनन्य उपासकगण, प्रेमपूर्वक गद्गद वाणी से आपके सुप्रभात का अभिधान कर रहे हैं।

सप्ताश्वो ननु भानुमान् स भगवान्निन्दुर्द्विजानां पति-
र्भौमः सौम्यबृहस्पतीभृगुसुतो वैवश्वतो दारुणः।
प्रह्लादश्वसृनन्दनोऽथ नवमः केतुश्च केतोर्नृणाम्
भाषन्ते च नवग्रहा ग्रहपते सत्सुप्रभातं तव।।७।।

भावार्थ- हे सभी ग्रहों के स्वामी भगवान् श्रीराम, सात घोड़ों के रथ वाले भगवान् सूर्य, ब्राह्मणों के राजा चन्द्रमा, पृथ्वी पुत्र मंगल, चंद्रमा के पुत्र बुध, बृहस्पति, भृगु के पुत्र शुक्राचार्य, विवस्वान् सूर्यनारायण के पुत्र भयंकर शनैश्चर, प्रह्लाद की बहिन सिंहिका का पुत्र राहु, तथा नवम ग्रह केतु, ये सभी सूर्य, चन्द्र, मंगल, बुध, बृहस्पति, शुक्र, शनैश्चर, राहु, केतु, नौओं ग्रह मनुष्यों के पताकास्वरूप आपश्री के सुप्रभात के उपलक्ष्य में मंगल भाषण कर रहे हैं।

कौसल्या ननु कैकयी च सरयू माता सुमित्रा मुदा

प्रेष्ठास्ते सचिवा पिता दशरथः श्रीमत्ययोध्या पुरी।

सुग्रीवप्रमुखा विभीषणयुताः श्रीचित्रकूटो गिरिः

सर्वे ते ब्रुवते सुवैष्णववराः श्रीसुप्रभातं प्रभो।।८।।

भावार्थ- हे प्रभो श्रीराम! आपकी जननी श्रीकौसल्या, कैकेयी, माता सुमित्रा, आपके सुमन्त्रादि प्रिय मन्त्रीगण, आपके पिता श्रीदशरथ, आपकी पुरी श्रीअयोध्या, विभीषण जी के सहित सुग्रीवादि आपके प्रिय परिकर वानर भालूगण, आपका प्रिय श्रीचित्रकूट पर्वत सभी श्रेष्ठ श्रीवैष्णवगण आपके सुप्रभात का अनुब्रवण अर्थात् गान कर रहे हैं।

श्रीरामभद्रभवभावनभानुभानो

प्रोद्दण्डराक्षसमहावनरुट् कृशानो।

वीरासनाश्रयमहीतलमण्डिजानो

सीतापते रघुपते तव सुप्रभातम्।।९।।

भावार्थ- हे रामभद्र! हे शिव को भी उत्पन्न करनेवाले, हे सूर्य के भी सूर्य, हे उद्दण्डराक्षसरूपमहावन को भस्म करनेवाले अग्नि, वीरासन की मुद्रा में पृथ्वी को घुटने से स्पर्श करके सुशोभित मुद्रा में विराजमान सीतापति, रघुकुल के स्वामी प्रभु आपका सुप्रभात हो अर्थात् आपका प्रभात शोभन और मंगलदायक हो।

श्रीरामचन्द्रचरणाश्रितपारिजात

प्रस्यन्दिकारुणि विलोचन वारिजात।

राजाधिराज गुणवर्धितवातजात

श्री श्रीपते रघुपते तव सुप्रभातम्।।१०।।

भावार्थ- हे श्रीरामचन्द्र जी, हे अपने चरणाश्रितों के कल्पवृक्ष, हे करुणामृत बरसाने वाले कमलनेत्र, हे राजाधिराज, हे अपने सौशील्य गुण से श्रीहनुमान जी को प्रोत्साहित करने वाले प्रभु, हे लक्ष्मी जी की भी लक्ष्मी श्रीसीता जी के पति प्रभु श्रीराम आपका सुप्रभात हो।

श्रीराम राम शिवसुन्दरचक्रवर्तिन्

श्रीराम राम भवधर्मभवप्रवर्तिन्।

श्रीराम राम नवनामनवानुवर्तिन्

श्रियः पते रघुपते तव सुप्रभातम्।।११।।

भावार्थ- हे श्रीराम, हे राम अर्थात् परशुराम को भी शिव अर्थात् कल्याण प्रदान करनेवाले, हे सौन्दर्यशालियों के चक्रवर्ती अर्थात् सर्वश्रेष्ठ सुन्दर, हे श्रीराम, हे राम, भव अर्थात् रमणीय कल्याणात्मक वैदिक धर्म के प्रवर्तक हे श्रीराम, रामनव अर्थात् विनयातिशय के कारण परशुराम जी के चरणों में विनम्र होने वाले और श्रीराम नाम जप से

विनम्र भक्तों का अनुवर्तन करनेवाले मोक्षरूप श्री के अधिपति रघुपति आपका सुप्रभात हो।

श्रीराम राघव रघूत्तम राघवेश
श्रीराम राघव रघूद्वह राघवेन्द्र।
श्रीराम राघव रघूद्भव राघवेन्द्रो
श्री भूपते रघुपते तव सुप्रभातम्।।१२।।

भावार्थ- हे श्रीराम, हे रघुकुल में प्रकट परमात्मा, हे रघुवंशियों में उत्तम, हे राघवेश, हे राघव अर्थात् रघुवंशियों के हितैषी, हे रघुद्वह अर्थात् रघुवंशियों को उन्नति के शिखर पर पहुँचाने वाले, रघुकुल में श्रेष्ठ, हे राघव अर्थात् रघु नामक जीवों के एकमात्र वास्तविक सम्बन्धी, हे रघूद्भव अर्थात् जीवमात्र को उत्कृष्ट कल्याण प्रदान करने वाले, हे रघुकुल के चन्द्रमा, हे श्रीभूपते अर्थात् शोभासम्पन्न भारतभूमि के रक्षक, रघुकुल के स्वामी भगवान् श्रीराम आपश्री का सुप्रभात हो।

श्रीराम रावणवनान्वयधूमकेतो
श्रीराम राघवगुणालयधर्मसेतो।
श्रीराम राक्षसकुलामयमर्महेतो
श्रीसत्पते रघुपते तव सुप्रभातम् ।।१३।।

भावार्थ- हे श्रीराम! हे रावण के वंशरूप वन को भस्म करने के लिए अग्नि के समान, हे राघव, हे सद्गुणों के भवन, सनातन धर्म के सेतु, हे राक्षसकुल के आमय अर्थात् विनाशात्मक मर्मान्तक कष्ट के कारण, हे भक्तरूप श्रीसन्तों के स्वामी आपका सुप्रभात हो।

श्रीराम दाशरथईश्वररामचन्द्र

श्रीराम कर्मपथतत्पररामभद्र।

श्रीराम धर्मरथमाध्वररम्यभद्र

श्रीमापते रघुपते तव सुप्रभातम्।।१४।।

भावार्थ- हे श्रीराम, हे दशरथनन्दन, हे ईश्वर, हे रामचन्द्र, हे वैदिक सत्कर्म में तत्पर, हे रामभद्र, हे धर्म रथ पर आरुढ़, हे माध्वर अर्थात् अध्वररूप यज्ञ को मा अर्थात् लक्ष्मी प्रदान करने वाले, हे रमणीय कल्याण के दाता, हे श्री की भी माँ अर्थात् लक्ष्मी सीता जी के प्राणपति रघुपति, श्रीराम आपका प्रभात सुन्दर हो।

श्रीराम माधवमनोभवदर्पहारिन्

श्रीराम माधव मनोभवसौख्यकारिन्।

श्रीराम माधव मनोभवमोदधारिन्

श्रीशंपते रघुपते तव सुप्रभातम्।।१५।।

भावार्थ- हे श्रीराम, हे माधव अर्थात् मायापति, हे मनोभव अर्थात् काम के दर्पनाशक, हे माधव अर्थात् परमशक्ति सीता जी के पति, हे मनोभव अर्थात् मन को कल्याण और सुख देने वाले, हे माधव अर्थात् मधुमास चैत्र में प्रकट एवं मन के भक्तिरूप कल्याण एवं प्रसन्नता के धारक, हे श्रीशंपते अर्थात् श्रीवैष्णव के प्रपत्तिरूप कल्याण के रक्षक प्रभु आपश्री का सुप्रभात हो।

श्रीराम तामरसलोचनशीलसिन्धो
श्रीराम काममदमोचनदीनबन्धो।
श्रीराम राम रणरोचनदाक्षसान्धो
श्रीमत्पते रघुपते तव सुप्रभातम्।।१६।।

भावार्थ- हे श्रीराम, हे कमलनेत्र, हे शील के सागर, हे कामदेव के मद को दूर करने वाले, हे दीनबन्धु, हे रामरणरोचन अर्थात् वाग्युद्ध में परशुराम जी को भी सन्तुष्ट करने वाले, हे राक्षसों के लिए कूप के समान संग्राम वाले अर्थात् जिस प्रकार कुएँ में गिरा हुआ व्यक्ति किंकर्तव्यविमूढ़ हो जाता है उसी प्रकार अपने संग्राम से राक्षसों को किंकर्तव्यविमूढ़ करने वाले, हे लक्ष्मीपति विष्णु के भी रक्षक प्रभु आपका प्रभात मंगलमय होवे।

कौसल्यया प्रथममीक्षितमञ्जुमूर्तेः

श्री श्रीपतेर्दशरथार्भकभावपूर्तेः।

कोदण्डचण्डशरसर्जितशत्रुजूर्तेः

श्रीराम राघव हरे तव सुप्रभातम्।।१७।।

भावार्थ- हे श्रीराम, हे राघव, हे श्रीहरे, कौसल्या जी के द्वारा सर्वप्रथम जिनकी सुकोमल बालझाँकी निहारी गई, जो सीतापति एवं दशरथ जी के वत्सलभाव की पूर्णता के माध्यम बने, जिन्होंने अपने शाङ्र्गधनुष से छोड़े हुए भयंकर बाणों द्वारा शत्रुओं के हृदय में ज्वर उत्पन्न कर दिया ऐसे आपश्री का सुन्दर प्रभात हो।

नीलोत्पलाम्बुदतनोस्तरुणार्ककोटि

द्युत्यम्बरस्य धरणीतनयावरस्य।

कोदण्डदण्डदमिताध्वरजित्वरस्य

श्रीराम राघव हरे तव सुप्रभातम्।।१८।।

भावार्थ- हे राघवेन्द्र सरकार! नीलकमल और मेघ के समान श्रीविग्रह वाले, करोड़ों बालसूर्यों के समान कान्तिमय पीताम्बर धारण करने वाले पृथिवीपुत्री सीताजी के पति, अपने प्रचण्ड धनुष से यज्ञ विजेताओं को भी दण्डित करने वाले आपश्री का प्रभात मंगलमय हो।

तातप्रियस्य मखकौशिकरक्षणस्य

श्रीवत्सकौस्तुभविलक्षणलक्षणस्य।

धन्वीश्वरस्य गुणशीलविचक्षणस्य

श्रीराम राघव हरे तव सुप्रभातम्।।१९।।

भावार्थ- हे राघवेन्द्र प्रभु! आप अपने पिताश्री को प्राणों से भी अधिक प्रिय हैं, आपने विश्वामित्र के यज्ञ की रक्षा की, आपश्री वत्सलाञ्छन और कौस्तुभरूप सुन्दर लक्षणों से युक्त हैं, आप धनुर्धरों में सर्वश्रेष्ठ तथा गुण और शील के कारण सबसे विशिष्ट हैं ऐसे श्रीहरे राघवेन्द्र आपका सुप्रभात हो।

मारीचनीचपतिपर्वतवज्रबाहोः

सौकेतवीहन उदस्तवपुः सुवाहोः।

विप्रेन्द्रदेवमुनिकष्टकलेशराहोः

श्रीराम राघव हरे तव सुप्रभातम्।।२०।।

भावार्थ- नीच मारीच रूप पर्वत के लिए जिनकी भुजाएँ वज्र के समान हैं जो आप तारका को मारने वाले और सुबाहु के शरीर को आग्नेय बाण से भस्म कर चुके हैं ऐसे ब्राह्मण देवता और मुनियों के

कष्टरूप चन्द्रमा के राहु, इन गुणों से युक्त हे श्रीराम राघव हरे आपका सुप्रभात हो।

शापाग्निदग्धमुनिदारशिलोद्धराङ्घ्रेः
सीरध्वजाक्षिमधुलिड्वनरुड्वराङ्घ्रेः।
कामारिविष्णुविधिवन्द्यमनोहराङ्घ्रेः
श्रीराम राघव हरे तव सुप्रभातम्।।२१।।

भावार्थ- हे प्रभु, श्रीराम राघव, श्रीहरे आपके चरण गौतम जी के शापाग्नि से जली हुई पुनः शिलारूप में परिणत हुई मुनिपत्नी अहल्या के उद्धारक हैं, आपके श्रीचरण कमलों पर ही सीरध्वज योगिराज जनक जी के नेत्र भ्रमर मंडराते रहते हैं, आपके सुन्दर श्रीचरण शंकर विष्णु और ब्रह्मा के भी वन्दनीय हैं ऐसे आपका प्रभात सुप्रभात हो। सम्पूर्ण जीव जगत का मंगल करता रहे।

कामारिकार्मुककदर्थनचुञ्चुदोष्णः
पेपीयमान महिजावदनेन्दुयूष्णः।
पादाब्जसेवकपयोरुहपूतपूष्णः
श्रीराम राघव हरे तव सुप्रभातम्।।२२।।

भावार्थ- हे श्रीराम राघवेन्द्र श्रीहरि, आपकी भुजा शिवजी के धनुष को तोड़ने में अति कुशल है, आप भूमिपुत्री सीताजी के मुख चन्द्र का अमृत सतत पान करते रहते हैं। आप अपने चरण कमलों के सेवकरूप कमलों के सूर्य हैं। ऐसे आपश्री का सुप्रभात हो।

देहप्रभाविजितमन्मथकोटिकान्ते:

कान्तालकस्य दयितादयितार्यदान्तेः।

वन्यप्रियस्य मुनिभानससृष्टशान्ते:

श्रीराम राघव हरे तव सुप्रभातम्।।२३।।

भावार्थ- हे श्रीहरि राघवेन्द्र भगवान् राम, आपने अपने शरीर की कान्ति से करोड़ों कामदेवों की शोभा जीत ली है, आपके केश बड़े ही सुन्दर हैं, आपका मनोहर एकनारीव्रतरूप इन्द्रियदमन आपकी धर्मपत्नी सीताजी को बहुत भाता है, आपको वन्यप्राणी बहुत प्रिय हैं। आपने मुनिजनों के मनों में भी शान्ति की सर्जना की है, ऐसे आपश्री का सुप्रभात विश्व के लिए मंगलकारक हो।

मायाहिरणमयमृगाभ्यनुधावनस्य

प्रत्तात्मलोकशवरीखगपावनस्य।

पौलस्त्यवंशबलवार्धिवनावनस्य

श्रीराम राघव हरे तव सुप्रभातम्।।२४।।

भावार्थ- मायामय कपट मृग के पीछे दौड़ने वाले, शबरी को अपना लोक देने वाले, जटायु जैसे अधम पक्षी को पवित्र करने वाले, रावण के वंश और बलरूप सागर के लिए वाडवाग्नि स्वरूप हे श्रीराम राघवेन्द्र प्रभु आपका प्रभात सुप्रभात हो।

साकेतकेतकृतसज्जनहृन्निकेत

सीतासमेतसमदिव्यगुणैरुपेत।

श्रीराम कामरिपुपूतमनःसुकेत

श्रीसार्वभौमभगवंस्तव सुप्रभातम्।।२५।।

भावार्थ- हे साकेताधिपति, हे सज्जनों के हृदय में निवास करने वाले, श्रीसीता जी से समलंकृत, सभी दिव्य गुणों से युक्त भगवान् शंकर के पवित्र मन को मन्दिर बनाकर उसमें विराजमान सम्पूर्ण भूमिभाग में विदित सार्वभौम भगवान श्रीराम आपका सुप्रभात हो।

सीताकराम्बुरुहलालितपादपद्म

सीतामुखाम्बुरुह लोचनचञ्चरीक।

सीताहृदम्बुरुहरोचनरश्मि मालिन्

श्रीजानकीश भगवँस्तव सुप्रभातम्।।२६।।

भावार्थ- श्रीसीता जी के करकमल से जिन आपश्री के चरण कमल लालित (सहलाए) जाते रहते हैं, सीता जी के मुख कमल के जिन आपश्री के नेत्र भ्रमर हैं, सीताजी के नेत्र कमल के लिए जो आपश्री स्वयं सूर्यनारायण हैं ऐसे हे जानकीपति भगवान् श्रीराम आपश्री का सुप्रभात हो।

श्रीमैथिलीनयनचारुचकोरचन्द्र
श्रीस्वान्तशंकरमहोरकिशोरचन्द्र।
श्रीवैष्णवालिकुमुदेशकठोरचन्द्र
श्रीरामचन्द्र भगवँस्तव सुप्रभातम्।।२७।।

भावार्थ- हे श्रीमैथिली जी के नेत्ररूप सुन्दर चकोरों के चन्द्रमा, हे श्रीशिवजी के मन को दिव्य तेज देनेवाले बालचन्द्र, हे श्रीवैष्णव श्रेष्ठ कुमुदों के विकास हेतु पूर्णचन्द्रमा भगवान् श्रीरामचन्द्र आपश्री का सुप्रभात हो।

श्रीकोसलाहृदयमालयमामयूख
प्रेमोल्लसज्जनक वत्सलवारिराशे।
शत्रुघ्नलक्ष्मणभवद्भरतार्चिताङ्घ्रे
श्रीरामभद्र भगवँस्तव सुप्रभातम् ।।२८।।
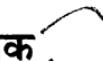
भावार्थ- हे श्रीअयोध्या के हृदयरूप क्षीरसागर के नवोदित चन्द्रमा, प्रेम से सुशोभित हो रहे पिता दशरथ एवं योगिराज जनक के वत्सलरस के निवासस्थान, महासागर, श्रीशत्रुघ्न श्रीलक्ष्मण तथा भावते भरत द्वारा पूजित चरणकमल, हे भगवान रामभद्र आपश्री का सुप्रभात हो।

श्रीमद्वसिष्ठतनयापुलिने कुमारै-
राक्रीडतोऽत्र भवतो मनुजेन्द्रसूनोः।
कोदण्डचण्डशरतूणयुगाप्तभासः
श्रीकोसलेन्द्र भगवँस्तव सुप्रभातम्।।२९।।

भावार्थ- हे भगवान् कोसलेन्द्र, वसिष्ठपुत्री सरयू जी के तट पर अपने मित्र कुमारों के साथ खेलते हुए, धनुष, तीक्ष्ण बाण और दो तूणीरों की शोभा से युक्त, महाराज दशरथ के ज्येष्ठपुत्र आपश्री का सुप्रभात हो।

नक्तंचरीकदन नन्दितगाधिसूनो
मारीचनीचसुभुजार्दनचण्डकाण्ड।
कामारिकार्मुकविभंजन जानकीश
श्रीराघवेन्द्र भगवँस्तव सुप्रभातम्।।३०।।

भावार्थ- हे तारका का वध करने वाले, हे विश्वामित्र को प्रसन्न करने वाले प्रभु, हे मारीच सुबाहु के मानमर्दनकर्ता, श्रेष्ठ बाणों से युक्त, हे शिव धनुर्भङ्गकर्ता, हे जानकीपति राघवेन्द्र भगवान् श्रीराम आपश्री का सुप्रभात हो।

गुर्वर्थमुज्झितसुरस्पृहाराज्यलक्ष्मीः
सीतानुजानुगतविन्ध्य वनप्रवासिन्।
पौरन्दरिप्रमदवारिधिवाडवाग्ने
श्रीपार्थिवेन्द्र भगवँस्तव सुप्रभातम्।।३१।।

भावार्थ- पिताश्री के वचन की रक्षा के लिए देवदुर्लभ राज्यलक्ष्मी का त्याग कर देनेवाले, सीता जी तथा लक्ष्मण जी के साथ विन्ध्यप्रदेश में वनवास करने वाले, जयन्त के अहंकारजनित हर्षसागर के लिए वाडवाग्नि स्वरूप, हे राजाओं के राज भगवान् श्रीराम आपश्री का सुप्रभात हो।

प्रोद्दण्डकाण्डहुतभुक्छलभीकृतारे
मारीचमर्दन जनार्दन जानकीश।
पौलस्त्यवंशवनदारुणधूमकेतो
श्रीमानवेन्द्र भगवँस्तव सुप्रभातम्।।३२।।

भावार्थ- जिन्होंने शत्रुओं को उत्कृष्ट दण्ड देने वाले अपने दिव्य बाणरूप अग्नि का पतंगा बना दिया, जो मारीच के वधकर्ता भक्तों के प्रार्थनीय जानकीपति हैं, जो रावण के वंशरूप वन को भस्म करने के लिए वनाग्नि हैं ऐसे हे मानवेन्द्र मनुवंशीय राजाओं में श्रेष्ठ भगवान् श्रीराम आपका प्रातःकाल मंगलमय हो।

कौसल्यागर्भदुग्धोदधिविमलविधो सर्वसौन्दर्य सीमन्
प्रोन्मीलन्मञ्जुकञ्जारुणनवनयनव्रीडितानेककाम।
कन्दश्यामाभिरामप्रथितदशरथब्रह्मविद्याविलासिन्
भूयात्त्वत्सुप्रभातं भवभयशमनं श्रीहरे ताटकारे।।३३।।

भावार्थ- हे कौसल्या जी के गर्भ क्षीरसागर के पूर्ण चन्द्रमा, हे सम्पूर्ण सुन्दरताओं की सीमा, अपने प्रातःकाल (शयन के पश्चात्) खुलते हुए लाल कमल के समान सुन्दर, नेत्रों द्वारा करोड़ों कामदेवों को लज्जित करने वाले, नीले बादल के समान सुन्दर दशरथ जी को विख्यात करने वाले, ब्रह्मविद्या में आनन्द लेने वाले, ताटका के शत्रु, हे श्रीहरि भगवान् राम आपका यह सुप्रभात संसार के भय को दूर करनेवाला हो।

विश्वामित्राध्वरारिप्रवलखलकुलध्वान्तबालार्करूप
ब्रह्मस्त्रीशापतापत्रितयकदनकृत् पादपाथोज राम।
भूतेशेष्वासखण्डिन्भृगुवरमदहन्मैथिलानन्दकारिन्
सीतापाणिग्रहेष्ट प्रभवतु भवतो मंगलं सुप्रभातम्।।३४।।

अर्थ- विश्वामित्र के यज्ञ के शत्रु प्रचण्ड बलशाली खलकुलरूप अंधकार के लिए बालसूर्यस्वरूप, ब्राह्मणपत्नी अहल्या के शाप और तीनों तापों को नष्ट करने वाले श्रीचरणकमल, शिवजी के धनुष को तोड़ने वाले, परशुराम के मद को नष्ट करनेवाले, मिथिला के लोगों को आनन्द देनेवाले, सीता जी के पाणिग्रहण से संतुष्ट हे भगवान् राम आपश्री का सुप्रभात संसार के लिए समर्थ मंगलकारक हो।

विभ्राणामोघबाणं धनुरिषुधियुगं पीतवल्कंवसान
त्यक्त्वायोध्यामरण्यं प्रमुदितहृदयन् मैथिलीलक्ष्मणाभ्याम्।
राजच्छ्रीचित्रकूट प्रदमितहरिभूर्दूषणघ्नःखरारे-
र्भूयाद्भग्नत्रिमूर्ध्नस्तवभवजनुषां श्रेयसे सुप्रभातम्।।३५।।

भावार्थ- अमोघ बाण धनुष एवं दो तरकसों के धारण करने वाले, पीताम्बर बल्कलवस्त्र धारण करने वाले, प्रसन्न मन से सीता जी

एवं लक्ष्मण जी के साथ श्री अवध को छोड़कर वन के लिए प्रस्थान किए हुए श्रीचित्रकूट को सुशोभित करने वाले, इन्द्र पुत्रजयन्त का दमन करने वाले, खरदूषणत्रिशिरा को दण्ड देने वाले हे प्रभु श्रीराम आपश्री का सुप्रभात संसार में जन्म लेनेवाले प्राणियों के कल्याण के लिए हो।

मायैणघ्नोजटायुः शवरीसुगतिदस्तुष्टवातेर्विधातुः
सुग्रीवं मित्रमेकाशुगनिहतपतद्वालिनो बद्धसिन्धोः।
लङ्कातङ्कैकहेतोः कपिकटकभृतो जाम्बवन्मुख्यवीरै-
र्हत्वा युद्धे दशास्यं स्वनगरमवतः सुप्रभातं प्रभो ते।।३६।।

भावार्थ- मायामृग का वध करने वाले, जटायु शबरी को सुन्दर गति देने वाले, हनुमानजी को संतुष्ट करने वाले, सुग्रीव को मित्र बनाने वाले, एक ही बाण से बालि का वध करने वाले, समुद्र पर सेतु बंधाने वाले, लंका के आतंक के एक मात्र कारण, वानर सेना का पालन करने वाले, जाम्बवान आदि प्रमुख वीर वानरों के साथ युद्ध में रावण को मारकर पुष्पक विमान द्वारा श्रीअयोध्या के लिए पधारते हुए प्रभु श्रीराम आपश्री का सुप्रभात हो।

कलितकनकमौलेर्वामभागस्थसीता-

ननवनजदृगाले: स्वर्णसिंहासनस्थ:।

हनुमदनघभक्ते: सर्वलोकाधिपस्य

प्रथयति जगदेतद् राम ते सुप्रभातम्।।३७।।

भावार्थ- मस्तक पर श्रीअयोध्या का स्वर्णनिर्मित राजमुकुट धारण किए हुए वामभाग में विराजमान श्रीसीताजी के मुखकमल पर जिनके नेत्र भ्रमर मंडरा रहे हैं ऐसे स्वर्ण सिंहासन पर विराजमान, श्रीहनुमान जी की निष्पाप भक्ति से संतुष्ट, सम्पूर्ण लोकों के स्वामी हे महाराज श्रीराम यह सम्पूर्ण संसार आपश्री के सुप्रभात की प्रशंसा कर रहा है।

दिनकरकुलकेतो श्रौतसेतुत्रहेतो

दशरथ नृपयागापूर्वदुष्टाब्धिकौर्व।

अवनिदुहितृभर्तुश्चित्रकूटे विहर्तु-

स्त्रिभुवनमभिधत्ते राम ते सुप्रभातम्।।३८।।

भावार्थ- हे सूर्यकुल के केतु, हे वैदिक धर्म सेतु के रक्षक, हे महाराज दशरथ के यज्ञ के अपूर्व श्रेष्ठ पुण्य फल, हे दुष्टरूप महासागर के और्व अर्थात् बाडवाग्नि प्रभु श्रीराम, श्रीचित्रकूट में विहार करने वाले

पृथ्वीपुत्री के पति आपश्री के सुप्रभात का ये तीनों ही लोक अभिधावृत्ति से गान कर रहे हैं।

सकलभुवनपाला लोकपाला नृपालाः
सुरमुनिनरनागाः सिद्धगन्धर्वमुख्याः।
कृतविविधसपर्या रामराजाधिराज
प्रगृणत इम ईड्यं सुप्रभातं प्रभाते।।३९।।

भावार्थ- हे राजाधिराज भगवान् श्रीराम सम्पूर्ण भुवनों के पालक, लोकपाल, पृथिवी के राजगण, देवता-मुनि-मनुष्य-नाग सिद्ध-श्रेष्ठगन्धर्वगण ये सभी लोग प्रातःकाल आपकी अनेक पूजाएँ करके आपके स्तुति योग्य सुप्रभात का बखान कर रहे हैं।

अनिशममलभक्त्या गीतसीताभिरामो
दशदिशमभिसीतावत्सलांभोधिचन्द्रः।
हृदयहरिनिवासोऽप्रयुक्तरारण्यवासः
प्रणिगदति हनूमान् राम ते सुप्रभातम्।।४०।।

भावार्थ- हे महाराज प्रभु श्रीराम! निर्मल भक्ति से दशों दिशाओं में निरन्तर सीताभिराम श्रीराम का गान करने वाले, सीता जी के वत्सलरसरूप महासागर के चन्द्रमा, अपने हृदय में श्रीसीताजी का

निवास कराने वाले और स्वयं श्रीसीताजी की आज्ञा से उत्तरारण्य में निवास करनेवाले, अञ्जनानन्दवर्धन श्रीहनुमान जी महाराज आप श्री का सुप्रभात मधुर स्वर में गा गा कर प्रसन्न हो रहे हैं।

श्री श्रीनिवाससविधे तदनुज्ञया वै
सीतापतेर्हरिपदाम्बुजचिन्तकेन।
गीतं मया गिरिधरेण हि रामभद्रा-
चार्येण भद्रमभिसंशतु सुप्रभातम्।।४१।।

इति जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामि
रामभद्राचार्य प्रणीतं श्रीसीतारामसुप्रभातं सम्पूर्णम्।।

भावार्थ- इस प्रकार विगत आश्विन नवरात्र में तिरुपति श्रीनिवास वेंकटेश जी के ब्रह्मोत्सव के उपलक्ष्य में श्रीवाल्मीकीय रामायण के कथावाचन के हेतु तिरुमाला जाकर श्री श्रीनिवास जी की ही सन्निधि में विगत आश्विन शुक्ल पक्ष द्वितीया विक्रमी २०६५ तदनुसार १ अक्टूबर २००८ सायंकाल तिरुपति बाला जी की आज्ञा पाकर भगवान् श्रीसीताराम जी के चरणकमलचिन्तक मुझ गिरिधर कवि जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य द्वारा प्रणीत यह सुप्रभात गाने पढ़ने और सुननेवालों

को भद्र का अभिशंसन करें अर्थात् सभी इस सुप्रभातस्तव को गाने सुनने और पढ़नेवालों को कल्याण से युक्त कर दे।

इस प्रकार श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी रामभद्राचार्य जी महाराज द्वारा प्रणीत श्रीसीताराम सुप्रभात सम्पन्न हुआ।

धर्मचक्रवर्ती महामहोपाध्याय विद्यावाचस्पति कविकुलरत्न श्रीचित्रकूटतुलसीपीठाधीश्वर

जगद्गुरु रामानन्दाचार्य स्वामी श्रीरामभद्राचार्य जी महाराज द्वारा रचित

प्रकाशन सूची

	पुस्तक नाम	मूल्य
1.	श्रीनारदभक्तिसूत्रेषु श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) हिन्दी अनुवाद	101 रु० प्रति
2.	श्रीगीतातात्पर्य (दार्शनिक हिन्दी ग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	20 रु० प्रति
3.	श्रीरामस्तवराजस्तोत्र श्रीराघवकृपाभाष्यम् (हिन्दी अनुवाद)	50 रु० प्रति
4.	ब्रह्मसूत्रेषु श्रीराघवकृपाभाष्यम् (संस्कृत ग्रन्थ)	200 रु० प्रति
5.	श्रीमद्भगवद्गीतासु श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	500 रु० प्रति सैट
6.	कठोपनिषदि श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	150 रु० प्रति
7.	केनोपनिषदि श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	90 रु० प्रति
8.	माण्डूक्योपनिषदि श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	60 रु० प्रति
9.	ईशावास्योपनिषदि श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	125 रु० प्रति
10.	प्रश्नोपनिषदि श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	70 रु० प्रति
11.	तैत्तरीयोपनिषदि श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	60 रु० प्रति
12.	ऐतरेयोपनिषदि (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	90 रु० प्रति
13.	श्वेताश्वतारोपनिषदि श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ (हिन्दी अनुवाद)	200 रु० प्रति
14.	छान्दोग्योपनिषदि श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	200 रु० प्रति
15.	वृहदारण्यकोपनिषदि श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	200 रु० प्रति
16.	मुण्डकोपनिषद् श्रीराघवकृपाभाष्यम् (भाष्यग्रन्थ) (हिन्दी अनुवाद)	90 रु० प्रति
17.	श्रीभार्गवराघवीयम् (संस्कृत महाकाव्य) (हिन्दी अनुवाद)	150 रु० प्रति
18.	अरुन्धतीमहाकाव्य (हिन्दी महाकाव्य)	75 रु० प्रति
19.	आजादचन्द्रशेखरचरितम् (संस्कृत खण्डकाव्य) (हिन्दी अनुवाद)	30 रु० प्रति
20.	लघुरघुवरम् (संस्कृत खण्डकाव्य) (हिन्दी अनुवाद)	10 रु० प्रति
21.	सरयूलहरी (संस्कृत खण्डकाव्य) (हिन्दी अनुवाद)	10 रु० प्रति
22.	काका विदुर (हिन्दी खण्डकाव्य)	10 रु० प्रति
23.	माँ शबरी (हिन्दी खण्डकाव्य) (प्रेस में)	
24.	श्रीराघवाभ्युदयम् एकांकी नाटक (संस्कृत) (हिन्दी अनुवाद)	20 रु० प्रति
25.	कुब्जापत्रम् (संस्कृत पत्रकाव्य)	20 रु० प्रति
26.	राघवगीतगुंजन (हिन्दी गीतकाव्य)	20 रु० प्रति
27.	भक्तिगीतसुधा (हिन्दी गीतकाव्य)	20 रु० प्रति
28.	श्रीरामभक्तिसर्वस्वम् (शतककाव्य एवं स्तोत्रकाव्य)	
29.	श्रीराघवभावदर्शनम् (संस्कृत स्तोत्रम्) (हिन्दी अनुवाद)	10 रु० प्रति
30.	प्रभु करि कृपा पाँवरि दीन्हीं	20 रु० प्रति
31.	मानस में तापस प्रसंग	25 रु० प्रति

पुस्तक नाम	मूल्य
32. परम बड़भागी जटायु	20 रु० प्रति
33. श्रीसीतारामविवाहदर्शन (प्रवचन संग्रह)	50 रु० प्रति
34. मानस में सुमित्रा	25 रु० प्रति
35. श्रीरामचरितमानस (मूल गुटका) (श्रीतुलसीपीठ संस्करण)	100 रु० प्रति
36. श्रीरामचरितमानस भावार्थ बोधिनी हिन्दी टीका	350 रु० प्रति
37. श्रीरासपञ्चाध्यायी विमर्शः	50 रु० प्रति
38. अहल्योद्धार (प्रवचन संग्रह)	50 रु० प्रति
39. तुम पावक महँ करहु निवासा	50 रु० प्रति
40. सन्ध्योपासना	10 रु० प्रति
41. हर ते भे हनुमान	50 रु० प्रति

पूज्यपाद जगद्गुरु जी के भजन संग्रह (कैसेट्स)

नाम	मूल्य
1. भजन सरयू	30 रु० प्रति
2. भजन यमुना	30 रु० प्रति
3. भजन सरयू सी०डी० (MP3)	50 रु० प्रति
4. भजन यमुना सी०डी० (MP3)	50 रु० प्रति
5. सम्पूर्ण श्रीमद्भागवत्कथा (VCD)	1100 रु० प्रति
(जगन्नाथपुरी एवं बदरीनाथ जी)	रु० प्रति
6. सम्पूर्ण श्रीरामकथा (DVD) (चित्रकूट)	1100 रु० प्रति सैट
7. सम्पूर्ण श्रीरामकथा (VCD) (मुम्बई, कान्दीवली)	1100 रु० प्रति सैट
8. सम्पूर्ण श्रीमद्वाल्मीकि रामायण कथा (हैदराबाद)	1100 रु० प्रति सैट

पुस्तक एवं भजन कैसेट्स प्राप्ति स्थान :

1. **श्रीतुलसीपीठ**
   आमोदवन, पो० नयागाँव, जि० सतना (म०प्र०)–485331
   फोन नं० 07670–265478, 05198–224413, मो० 09450916650

2. **जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय**
   चित्रकूट (उत्तर प्रदेश)–210205
   E-mail : jrhuniversity@yahoo.com

नोट : डाक का खर्च क्रेता को वहन करना होगा। विशेष जानकारी के लिए हमारी वेबसाइट www.jrhu.com को विजिट करें।

विशेष : उपरिलिखित सभी ग्रन्थ एवं सी०डी मँगाने के लिए डी०डी० भेजें। डॉ० कुमारी गीता देवी देय चित्रकूट